शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता : अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन

अश्वनी
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा,
मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

सारांश

भारतीय संस्कृति में सामुदायिक सहभागिता नई संकल्पना नहीं है, भारत में सदियों से विद्यालय और समुदाय का घनिष्ठ संबंध रहा है। भारत में आश्रम, गुरुकल तथा मदरसे जैसी शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्था स्थानीय समुदाय के द्वारा होती थी। विद्यालय और समुदाय एक दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे। उस समय गुरु का पूरे समुदाय में मान सम्मान होता था, वह एक तरह से समुदाय का आदर्श होता था। 20वीं सदी पूर्व ज्यादातर औपचारिक शिक्षा निजी लोगों या धार्मिक निकायों द्वारा दी जाती थी। भारत में ब्रिटिश शासन के आगमन से विद्यालय समुदाय से हटकर राज्याश्रित हो गये। शिक्षा सरकार का उत्तरदायित्व होने से विद्यालय और समुदाय के बीच फासला बढ़ने लगा और समुदाय विद्यालयों को एक सरकारी विभाग जैसा समझने लगा। विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करने में समुदाय की मदद लेना, विद्यालय में समुदाय की सहभागिता का स्वरुप, विद्यालय और समुदाय का संबंध, समुदाय की शिक्षण अधिगम में भूमिका और वर्तमान संदर्भ में शिक्षा में समुदाय की सहभागिता अध्यापक के द्वारा कैसे बढ़ाई जाए इत्यादि प्रश्नों के मेनज़र प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता के विभिन्न मुद्धों का अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में अध्ययन करने का लघु प्रयास किया गया है।.....

To read full Paper, subscribe the journal.
Link Of Subscription….